गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित होता दैनिक

संपादक : श्री मनोजकुमार चंपकलाल शाह

रजी.ओफिस : टी.एफ-०१,नानकराम सुपर मार्केट,रामनगर,साबरमती,अहमदाबाद- ३८० ००५.गुजरात,भारत.

फोन /फेक्स : (०७९) २७५७ ३३०७, ९०१६३ ३३३०७ (मो) ९३२८३ ३३३०७, ९८२५३ ३३३०७, Email : • Email : garvigujarat2007@gmail.comgarvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

वर्ष : 08 | अंक : 309 | दि. 10-03-2019 रविवार | वि.सं. 2075 | फागण सुद -०४ | पाना : 04 | किंमत : 00.50 पैसा

पाकिस्तान दुनिया की आंखों में धूल झोंक रहा है : भारत का दावा

मसूद सहित के आतंकी के खिलाफ पाकिस्तान ने कोई कदम नहीं उठाया

सभी आतंकी-आतंकवादी नेटवर्क मामले में पाकिस्तान लगातार झूठ फैलाने में व्यस्त : आतंकी के विरूद्ध निर्णायक कार्रवाई करने की चुनौती

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, भारत ने एक बार फिर पाकिस्तान पर आतंक के खिलाफ कार्रवाई न करने का आरोप लगाया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार ने कहा कि अगर पाकिस्तान नया पाकिस्तान होने के दावा करता है तो उसे आतंकी संगठनों के खिलाफ नया ऐक्शन भी लेना चाहिए । उन्होंने कहा कि पाकिस्तान लगातार झूठ फैलाने का काम कर रहा है, जबकि उसे भारत और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की बात मानकर आतंकी संगठनों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तान झूठ फैला रहा है कि उसने हमारे एक नहीं बल्कि दो फाइटर जेट मार गिराए है। पाकिस्तान का दावा है कि उसके पास इसकी विडीयो रिकॉर्डिंग भी है। यदि पाकिस्तान के पास ऐसे सबूत हैं तो वह उन्हें मीडिया के सामने क्यों नहीं लाता है। रवीश कुमार ने कहा कि भारत ने अपनी नॉन मिलिटरी स्ट्राइक में जैश के आतंकी ठिकानों पर की गई कार्रवाई में अपने टारगेट को हासिल किया है। उन्होंने कहा कि हमारे पास इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि उन्होंने भारत के खिलाफ सैन्य कार्रवाई में एफ-१६ का इस्तेमाल किया है। कुमार ने बताया कि हमने अमेरिका से कहा है कि वह इस बात की भारत के खिलाफ एफ-१६ का इस्तेमाल कर पाकिस्तान ने नियम और शर्तों का उल्लंघन तो नहीं किया है । विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री जिस तरह जैश-ए-मोहम्मद को लेकर बात करते हैं, इससे पता चलता है कि पाक. आतंक के खिलाफ कैसा रुख रखता है। रवीश कुमार ने कहा कि हम आतंकवाद के खिलाफ अभियान जारी रखेंगे, हमारी सेना सतर्क रहेगी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि पाकिस्तान का झूठ कई बार बेनकाब हो चुका है। पाकिस्तान की आर्मी के प्रवक्ता ने मीडिया से बातचीत में कहा था कि उनके देश में जैश की मौजूदगी नहीं है, जबकि उनके विदेश मंत्री ने एक इंटरव्यू में कहा था कि उन्होंने जैश की टॉप लीडरशिप से पुलवामा हमले में शामिल होने के बारे में जानकारी मांगी है।

पाक. नहीं सुधरेगा तो जोर देकर दबाव लाया जाएगा

आतंकी देश घोषित करने के लिए भारत दबाव बनाने तैयार

(संपूर्ण समाचार सेवा) वॉशिंगटन, पाकिस्तान अगर आतंकवाद को अपनी पॉलिसी के औजार के रूप में इस्तेमाल करना बंद नहीं करता तो भारत उसे आतंकवाद को प्रायोजित कराने वाला देश घोषित कराने पर जोर दे सकता है । दक्षिण एशिया के परमाणु टकराव की तरफ बढ़ने संबंधी पश्चिमी देशों के टिप्पणीकारों की चिंता के बीच नई दिल्ली ने यह संकेत दिया है । क्षेत्र में परमाणु टकराव की चिंताओं को खारिज करते हुए नई दिल्ली ने तमाम वार्ताकारो से यह भी कहा है कि क्षेत्र में मौजूदा तनाव के लिए पाकिस्तान जिम्मेदार है और भारत परमाणु बम की आड़ में इस्लामाबाद द्वारा आतंकवाद के इस्तेमाल के जरिए ब्लैकमेलिंग नहीं होने देगा। पुलवामा में सीआरपीएफ काफिले पर आत्मघाती हमले और उसके बाद के घटनाक्रमों की पृष्ठभूमि में एक वरिष्ठ भारतीय अधिकारी ने वॉशिंगटन में कहा, अब नया मानदंड है अब हम जवाब देंगे। अधिकारी ने कहा कि पाकिस्तान का परमाणु बम का झांसा चलने वाला नहीं है। उन्होंने यह भी दावा किया कि नई दिल्ली के रुख को अमेरिका समेत अंतरराष्ट्रीय समुदाय का समर्थन हासिल है। भारत के वरिष्ठ अधिकारी की यह टिप्पणी ऐसे वक्त में आई है जब अमेरिकी मीडिया में इस तरह की टिप्पणियों और संपादकीयों की बाढ़ आइ हुई है कि दक्षिण एशिया परमाणु टकराव की तरफ बढ़ रहा है।

पश्चिमी देशों के लोगों के बयान बाद भारत की टिप्पणी

केसरिया खेमे में टिकट को लेकर यहां मचा है घमासान

(जी.एन.एस.) आगरा, मैनपुरी लोकसभा सीट की सियासी बिसात पर सपाई लड़ाका तय होने के बाद अब केसरिया खेमे के सिपाहसालार का भी घमासान तेज हो गया है। लगभग तय है कि मुकाबला आमने-सामने का होगा। ऐसे में केसरिया खेमा भी इसे अपने लिए बड़ा अवसर मान रहा है। ऐसे में दावेदारी को जंग कांटे की चल रही है। इसमें संगठन पदाधिकारियों से लेकर जनप्रतिनिधि तक ताकत झोंक रहे हैं। लखनऊ से दिल्ली तक दौड़ का सिलसिला चल रहा है। मैनपुरी को सपा का गढ़ माना जाता है। यहां लंबे समय से भाजपा इस दुर्ग को भेदने की कसरत में जुटी है। हालांकि यह कोशिश कभी दूसरे नंबर तक पहुंचने से आगे नहीं बढ़ पाई। इस बार के चुनाव में भाजपा खुद को पहले से ज्यादा मजबूत मान रही है। वहीं सपा-बसपा गठबंधन से मुलायम सिंह यादव के प्रत्याशी बनने के बाद माना जा रहा है कि भाजपा का सीधा मुकाबला होगा। केंद्र की योजनाओं और हाल ही में हुई एयर स्ट्राइक के बाद पार्टी नई मोदी लहर बनने की उम्मीद लगाए बैठी है। इस सबके चलते ही दावेदार टिकट पाने को ज्यादा दम दिखा रहे हैं। पूर्व में जनप्रतिनिधि रह चुके और वर्तमान में सहकारी बैंक से जुड़े एक प्रमुख दावेदार कई बार बड़े नेताओं से संपर्क साध चुके हैं। वहीं उनके मुकाबले में एक और जनप्रतिनिधि हैं। वह भी पूर्व में जनप्रतिनिधि रह चुके हैं और वर्तमान में भी माननीय हैं। वह भी अपने संबंधों के सहारे टिकट की आस लगाए लखनऊ से दिल्ली तक दौड़ लगा रहे हैं। पूर्व में मुलायम इक्षसह के सामने चुनाव लड़ चुके एक उम्मीदवार भी फिर से सक्रिय हो गए हैं। वहीं पूर्व में लोकसभा चुनाव हार चुके एक उम्मीदवार स्थानीय संगठन के कुछ पदाधिकारियों के सहारे टिकट पाने की कतार में लगे हैं।

ये पहाड़िया न होतीं तो जीना होता मुहाल, जानें- कैसे संकट में हैं दिल्ली-NCR के करोड़ों लोग

नई दिल्ली । देश की राजधानी दिल्ली और इसके आसपास के प्रमुख शहरों को रिहायश ही नहीं बल्कि वाणिज्यिक और औद्योगिक गतिविधियों के लिए सबसे उपयुक्त माना गया है। पर्यावर णविद् स्वामी ज्ञानानंद सरस्वती बताते हैं कि दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्र में खुशहाली का कारण यह नहीं है कि यह राष्ट्रीय राजधानी है और यहां समग्र विकास हुआ है। बल्कि इसका कारण यह है कि यहां मानव के अनुकूल सभी प्राकृतिक संपदाएं भी अनुकूल हैं। दिल्ली से यमुना गुजरती है इसलिए यहां पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध है। राजस्थान के नजदीक होने के बावजूद भी दिल्ली में कभी रेगिस्तान की आंधियां तबाही नहीं करती क्योंकि इन धूल भरी आंधियों से बचाव करने को प्राचीनतम अरावली पर्वतमाला यहां है।

ईडी को यूके सरकार के अधिकारी ने बताया

वेस्टमिंस्टर कोर्ट पहुंचा नीरव के प्रत्यर्पण का आग्रह

भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि यूके ने भारत के आग्रह पर अब तक कोई जवाब नहीं दिया

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, यूनाइटेड किंगडम ने हीरा कारोबारी नीरव मोदी के प्रत्यर्पण के आग्रह को आगे बढ़ा दिया है। वहां के गृह मंत्री के दफ्तर ने कन्फर्म किया कि आगे विचार के लिए भारत के आवेदन को वेस्टमिंस्टर कोर्ट भेज दिया गया है । इससे पहले, भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार ने बताया कि यूके ने भारत के आग्रह पर अब तक कोई जवाब नहीं दिया है । नीरव मोदी अपने मामा मेहुल चोकसी के साथ मिलकर पंजाब नैशनल बैंक को १३ हजार करोड़ रुपये का चुना लगाकर पिछले वर्ष भारत से भाग गया था। उसे ब्रिटिश अखबार द टेलिग्राफ ने लंदन में खोज निकाला। प्रवर्तन निदेशालय ने कहा कि यूके से नीरव मोदी को भारत प्रत्यर्पित करने का आग्रह पिछले साल जुलाई में ही किया गया। ईडी ने बताया, यूके के गृह मंत्रालय की सेंट्रल अथॉरिटी ने प्रत्यर्पण का आग्रह आगे की कार्यवाही के लिए वेंस्टमिंस्टर कोर्ट के जिला जज के पास भेजने की पुष्टि की। दरअसल, नीरव मोदी का मामला आज अचानक मीडिया की सुर्खियां बन गईं, जब द टेलिग्राफ के एक संवाददाता ने वेष बदलकर लंदन की सड़को पर घूम रहे नीरव मोदी की तलाश कर ली। संवाददाता ने उससे कई सवाल पूछे, लेकिन नीरव मोदी का विडियो सामने आने के बाद आज विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार की प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी कुछ सवाल उठाए। संवाददाताओं के सवाल के जवाब में कुमार ने आश्वस्त किया कि बैंकों का ९ हजार करोड़ रुपये लेकर भागे विजय माल्या को भारत प्रत्यर्पित करवाने के लिए जिस स्तर की कोशिश की गई, उसी स्तर की कोशिश नीरव मोदी के प्रत्यर्पण को लेकर भी की जा रही है।

अल्पेश ठाकोर ने की स्पष्टता

सत्ता बिना रह सकता हूं लेकिन सम्मान बिना नहीं

अल्पेश ने प्रेस करके स्पष्ट कर दिया कि मैं कांग्रेस के साथ ही हूं और भाजपा में जाने का कोई इरादा नहीं है

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद, लोकसभा चुनाव के पहले कांग्रेस में भारी विवाद देखने को मिल रहा है। माणवदर के कांग्रेसी विधायक जवाहर चावडा ने अचानक इस्तीफा देने से कांग्रेस में भूकंप जैसी स्थिति है। हालांकि पार्टी का डेमेज कंट्रोल सफल होने से कांग्रेस को और एक झटका लगने से बच गये। अल्पेश ठाकोर अब कांग्रेस में ही रहेंगे। राधनपुर के विधायक अल्पेश ठाकोर ने आज प्रेस कांफ्रेंस करके स्पष्ट कर दिया है कि मैं कांग्रेस के साथ ही हूं और भाजपा में जाने का कोई इरादा नहीं है उन्होंने कहा कि नाराज था इसके इनकार नहीं है । सत्ता सभी को अच्छा लगता है और मुझे भी चाहिए मेरे लोगों के लिए । अल्पेश ने यह स्पष्टता कर दी कि आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे । अल्पेश ने कहा कि सत्ता लेकर लुटेरा साबित हो यह सत्ता मुझे नहीं चाहिए । अल्पेश ठाकोर ने प्रमाणिकता की बात करते हुए कहा कि ईमानदारी से कहता हूं कि मैं मंत्री पद के बारे में विचार किया था। मैं मंत्री बनुं यह काम करूं, यह करूं मेरे साथ जुड़े हुए लोग गरीब है। अपना घर नहीं है, शिक्षा नहीं है, रोजगार नहीं है। हमारा संघर्ष काफी है । हरएक क्षेत्र में उनके विकास की बात करनी पड़े। उनके विकास के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति वाली सरकार चाहिए । जो सरकार २४ घंटे यह लोगों के विकास के लिए बात करें। अल्पेश ने कहा कि यदि मंत्री बना होता तो मैं गरीब लोगों के लिए काम कर सकता, विकास की बात कर सकता । उनके सवालों पर भोजन बिना मंथन किया । पत्नी के राजनीति में प्रवेश पर अल्पेश ने कहा कि मेरी पत्नी मेरा घर संभालती है, मैं घर नहीं संभाल सकता हूं। लाखों गरीबों के घर संभालना होता है । मेरी पत्नी की मौत होगी तब तक राजनीति में नहीं आयेगी । सत्ता सभी को अच्छा लगता है और मुझे भी चाहिए मेरे लोगों के लिए। अल्पेश ने यह स्पष्टता कर दी कि आगामी लोकसभा चुनाव नहीं लड़ेंगे । अल्पेश ने कहा कि सत्ता लेकर लुटेरा साबित हो यह सत्ता मुझे नहीं चाहिए । अल्पेश ठाकोर ने प्रमाणिकता की बात करते हुए कहा कि ईमानदारी से कहता हूं कि मैं मंत्री पद के बारे में विचार किया था । मैं मंत्री बनुं यह काम करूं, यह करूं मेरे साथ जुड़े हुए लोग गरीब है । अपना घर नहीं है, शिक्षा नहीं है, रोजगार नहीं है । हमारा संघर्ष काफी है । अल्पेश ठाकोर ने कहा कि मैं मंत्री बनुं, यह काम करूं, यह करूं । मेरे साथ जुड़े हुए लोग गरीब है । अपना घर नहीं है, शिक्षा नहीं है, रोजगार नहीं है । हमारा संघर्ष काफी है । लोगों ने कहा कि जहां सम्मान है वहीं रहना । ईमानदारी से कहता हूं कि मैं मंत्री पद के बारे में विचार किया था । मैं सत्ता बिना रह सकता हूं लेकिन सम्मान बिना नहीं रह सकता हूं।

मसूद अजहर का नाम लेकर राहुल का तंज

क्या बीजेपी पार्टी ने जेल से निकालकर पाक नहीं भेजा ?

राहुल गांधी ने इस दौरान पीएनबी घोटाले में आरोपी नीरव मोदी के बहाने भी जमकर केंद्र पर हमला बोला

(संपूर्ण समाचार सेवा) बेंगलुरु, कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने पुलवामा आतंकी हमले का जिक्र करते हुए मोदी सरकार को निशाने पर लिया। कांग्रेस अध्यक्ष ने मसूद अजहर का नाम लेते हुए आतंकवाद को लेकर सरकार की नीति को कठघरे में खड़ा किया। राहुल ने इस दौरान पीएनबी घोटाले में आरोपी नीरव मोदी के बहाने भी केंद्र पर हमला बोला। कर्नाटक के हावेरी में एक जनसभा को संबोधित करने के दौरान राहुल ने आतंकवाद पर मोदी सरकार को घेरते हुए कहा, कुछ दिन पहले, पुलवामा में सीआरपीएफ के जवान शहीद होते हैं। मेरा प्रधानमंत्री से सीधा सवाल है, इनकी शहादत का कौन जिम्मेदार है। क्या बीजेपी सरकार ने मसूद अजहर को जेल से निकालकर पाकिस्तान नहीं भेजा। मोदीजी हम आपकी तरह आतंकवाद के सामने नहीं झुकते । राहुल ने कहा, ५ साल से प्रधानमंत्री राज कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी के राज में ४० साल में सबसे ज्यादा बेरोजगारी आज हैं । साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये नरेंद्र मोदी ने १५ लोगों को कर्जा दिया है। अनिल अंबानी को ४५ हजार करोड़ दिए हैं और फ्री गिफ्ट ३० हजार करोड़ का राफेल मामले में उनको दिया, पॉकेट में डाला। राहुल गांधी ने बीजेपी पर आरोप लगाते हुए कहा, मोदी सरकार दो हिंदुस्तान बनाना चाहते है । एक हिंदुस्तान नीरव मोदी और मेहुल चौकसी वाला, दूसरा हिंदुस्तान गरीब, किसान, मजदूर और हाशिए पर चले गए लोगों वाला। लेकिन कांग्रेस पार्टी दो हिंदुस्तान नहीं बनने देगी । एक हिंदुस्तान होगा जिसमें सबको न्याय मिलेगा । कर्नाटक के हावेरी में एक जनसभा को संबोधित करने के दौरान राहुल ने आतंकवाद पर मोदी सरकार को घेरते हुए कहा, कुछ दिन पहले, पुलवामा में सीआरपीएप के जवान शहीद होते हैं। मेरा प्रधानमंत्री से सीधा सवाल है, इनकी शहादत का कौन जिम्मेदार है। क्या बीजेपी सरकार ने मसूद अजहर को जेल से निकालकर पाकिस्तान नहीं भेजा नोटबंदी का जिक्र करते हुए राहुल ने कहा, नोटबंदी में सबको लाइन में खड़ा कर दिया। कहते है काले धन के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा हूं।

संपादकिय

अयोध्या मामले में मध्यस्थता से देश में मैत्री भावना का होगा संचार

आपसी सहमति से हासिल समाधान न केवल संबंधित पक्षों में सद्भाव बढ़ाएगा बल्कि देश में भी मैत्री की भावना का संचार करेगा। यह अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या मामले को बातचीत से हल करने के लिए तीन मध्यस्थ तय कर दिए। तीन सदस्यीय मध्यस्थता समूह की अध्यक्षता सेवानिवृत्त न्यायाधीश एफएम इब्राहिम कलीफुल्ला को सौंपी गई है। इस समूह के दो अन्य सदस्य हैं आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री रविशंकर और वरिष्ठ वकील एवं मध्यस्थता संबंधी मामलों के विशेषज्ञ श्रीराम पंचू। हालांकि, कुछ लोगों को श्रीश्री रविशंकर के मध्यस्थ होने पर आपत्ति है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि वह अपने स्तर पर अयोध्या मामले को बातचीत से हल करने की कोशिश कर चुके हैं। वह न केवल इस विवाद के हर पहलू से परिचित हैं, बल्कि उन्हें इसका भी भान है कि संबंधित पक्ष क्या चाहते हैं? स्पष्ट है कि उनके जैसे किसी शख्स को इस मध्यस्थता समूह में होना ही चाहिए था। सुप्रीम कोर्ट ने मध्यस्थता पैनल को आठ सप्ताह का समय दिया है और यह भी अपेक्षा की है कि आपसी बातचीत का विवरण मीडिया को सार्वजनिक करने से बचा जाए। इस पर भी विरोध के कुछ स्वर सामने आए हैं, लेकिन विरोध जताने वाले यह ध्यान रखें तो बेहतर कि किसी संवेदनशील मसले पर पल-पल की जानकारी देना कई बार समस्या को उलझाने का ही काम करता है। निस्संदेह इस मध्यस्थता समूह के सिर पर महती जिम्मेदारी है और यह तय है कि उस पर देश ही नहीं, दुनिया की भी निगाहें होंगी, लेकिन उसकी सफलता-असफलता संबंधित पक्षों के रुख-रवैये पर निर्भर करेगी। बेहतर हो कि उन्हें भी अपनी जिम्मेदारी का आभास हो। कहने को तो अयोध्या मामला जमीन के मालिकाना हक का विवाद है, लेकिन सच्चाई यही है कि यह केवल जमीन के एक टुकड़े का मसला नहीं है। इस पर हैरत नहीं कि कुछ लोग अभी भी यह तर्क पेश कर रहे हैं कि आखिर सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या विवाद पर फैसला सुनाने के बजाय उसे मध्यस्थता के हवाले क्यों कर दिया? इस तर्क का अपना महत्व है, लेकिन सभी पक्षों से बात करके किसी सर्वमान्य हल पर पहुंचने के जो लाभ हैं वे कहीं अधिक दूरगामी महत्व के हैं। यदि आपसी वार्ता से अयोध्या विवाद का हल निकल आता है तो किसी भी पक्ष को निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपसी सहमति से हासिल समाधान न केवल संबंधित पक्षों में सद्भाव बढ़ाएगा, बल्कि देश में भी मैत्री की भावना का संचार करेगा। क्या इससे बेहतर और कुछ हो सकता है कि अयोध्या मामले का हल इस तरह से हो कि कोई भी पक्ष हार या जीत की भावना से न भरे? यह सही है कि किसी सर्वमान्य हल पर पहुंचना एक कठिन काम है, लेकिन अगर तनिक भी संभावना है तो उसे टटोला जाना चाहिए। अच्छा होता कि सुप्रीम कोर्ट ने जो काम अब किया वह तभी कर देता जब उसकी ओर से पहली बार इस मामले को बातचीत से हल करने की जरूरत जताई गई थी। जो भी हो, कम से कम अब तो सुप्रीम कोर्ट को इसके लिए तैयार रहना चाहिए कि अगर मध्यस्थता से बात न बने तो फिर वह अपना फैसला सुनाने में देर न करे। वैसे अच्छा यही होगा कि इसकी नौबत न आए।

सशक्त राजनीतिक फिल्मों की हो शुरुआत, फिल्मों में न हो राजनीति

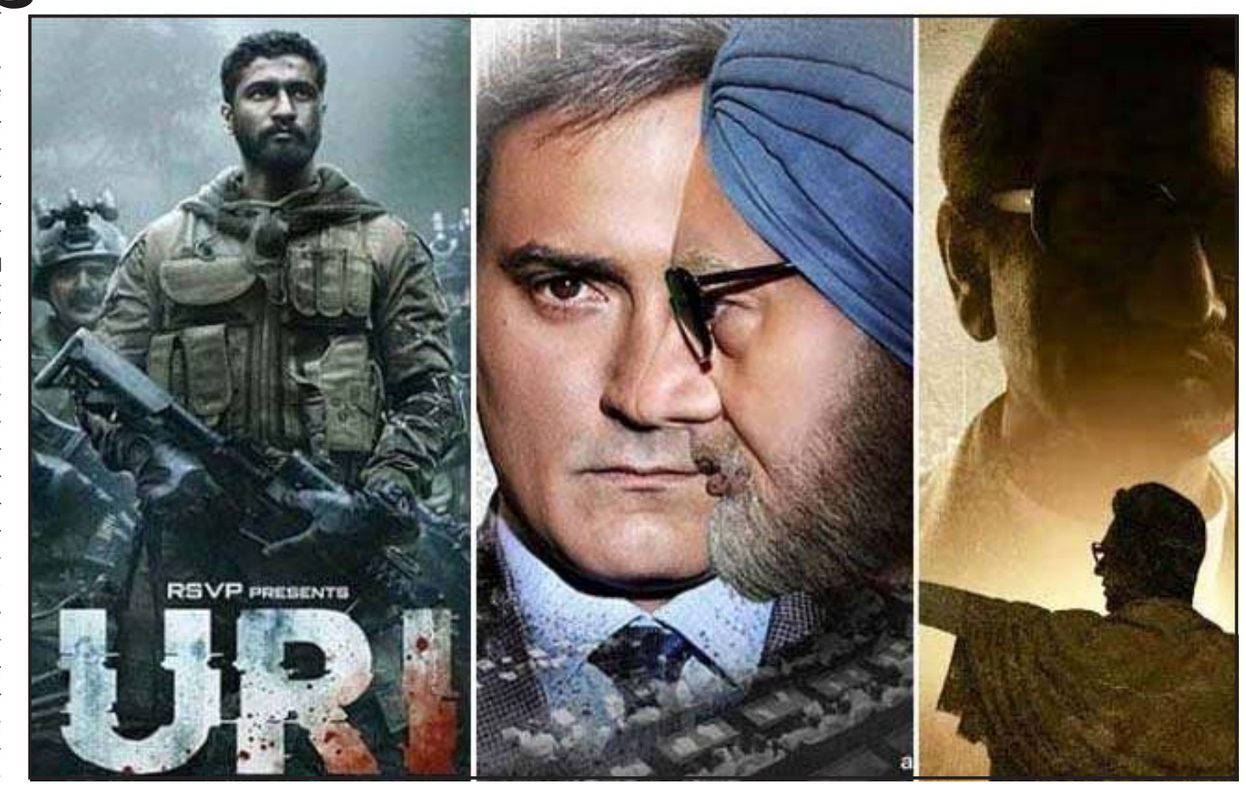

(जी.एन.एस.) सशक्त राजनीतिक फिल्मों की हो शुरुआत, फिल्मों में न हो राजनीति, राजनीतिक फिल्में बननी चाहिए और बड़ी संख्या में बननी चाहिए किंतु अधिकतम तटस्थता के सिद्धांत के साथ। डॉ. विजय अग्रवाल। हाल की इन चार फिल्मों को याद करिए- द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर, बाल ठाकरे, उरी-द सर्जिकल स्ट्राइक और मणिकर्णिका। अब इन दो प्रश्नों पर विचार करिए कि क्या इन चार अलग-अलग नाम वाली फिल्मों को कोई एक नाम दिया जा सकता है? मतलब है कि क्या कोई एक ऐसा तत्व है जो इन चारों में समान रूप से मौजूद है? दूसरा प्रश्न यह है कि यदि ऐसा है तो फिर समान तत्व वाली फिल्मों को लगभग एक साथ लाने का व्यावसायिक जोखिम क्यों उठाया गया? पहली दो बायोपिक फिल्मों को मुख्यत- बायोपिक फिल्म न कहकर राजनीतिक फिल्म कहना सत्य के अधिक निकट होगा। यदि बायोपिक कहने की मजबूरी ही हो तो इन्हें अधिक से अधिक बायोपिक इन डिस्गाइस यानी छद्म जीवनी कथा कहा जा सकता है। लोकसभा चुनावों से चंद माह पहले आई इन दोनों फिल्मों का राजनीतिक मकसद बिल्कुल साफ था-कांग्रेस के शासन की पोल खोलना और महाराष्ट्र में शिवसेना के पक्ष में भावनात्मक माहौल तैयार करना। इसीलिए कांग्रेस ने भरपूर कोशिश की कि द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर फिल्म रिलीज ही न हो पाए, लेकिन उसका इस मामले में असफल होना तय था और ऐसा ही हुआ। यदि किसी निर्देशक ने एन एक्सीडेंटल चीफ मिनिस्टर फिल्म रिलीज करनी चाही होती तो शायद वह संभव नहीं होता। सवाल किसी पार्टी विशेष की विचारधारा का नहीं है, बल्कि सत्ता के चरित्र का है, जो अपने थोड़े से विरोध में या विरोध की आशंका मात्र से सिहरकर अनुदारता के क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो यही कांग्रेस आपातकाल के दौरान आंधी फिल्म के प्रदर्शन पर रोक नहीं लगाती, जो प्रत्यक्षत- बायोग्राफी ही नहीं थी, इंदु सरकार की तरह। हां, उसमें इंदिरा गांधी के जीवन की झलक अवश्य थी। उरी और मणिकर्णिका के विषय तो बिल्कुल अलग-अलग हैं, लेकिन इन दोनों का उद्देश्य बिल्कुल एक है- राष्ट्रवाद की भावना की लहर उठाना। उरी जहां पाकिस्तान के खिलाफ सैनिकों के शौर्य को बयान करती है वहीं मणिकर्णिका साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध वीरतापूर्ण संघर्ष को दिखाती है। एक में राष्ट्र की रक्षा का आवेग है तो दूसरे में स्वतंत्रता का उत्सर्ग। दोनों फिल्मों के केंद्र में राष्ट्रवादी भावनाएं हैं। आगामी लोकसभा चुनाव के संदर्भ में राजनीतिक दलों के विचारधारात्मक स्वरूप को देखते हुए इस राष्ट्रवादी भावना का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है। यह न तो कोई गलत बात है और न ही चिंताजनक। अवैधानिक होने का तो सवाल ही नहीं उठता। ध्यान रहे कि जब सिनेमा नामक आश्चर्यजनक विधा को जन्म लिए दो दशक ही हुए थे तब ग्रीफिथ ने 1915 में द बर्थ ऑफ नेशन फिल्म बनाकर राजनीति के साथ सिनेमा के घनिष्ठ रिश्ते की खुलेआम घोषणा कर दी थी। बाद में साम्यवादी रूस ने उसका भरपूर इस्तेमाल किया। हिटलर ने तो इस्तेमाल करने की हद ही कर दी। उसे लार्जर दैन लाइफ की उस चरम सीमा तक दिखाया गया कि लोगों में भय फैलाने के साथ-साथ सिनेमा खुद भी भय का शिकार हो गया। लोकसभा चुनावों से चंद माह पहले आई इन दोनों फिल्मों का राजनीतिक मकसद बिल्कुल साफ था-कांग्रेस के शासन की पोल खोलना और महाराष्ट्र में शिवसेना के पक्ष में भावनात्मक माहौल तैयार करना। इसीलिए कांग्रेस ने भरपूर कोशिश की कि द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर फिल्म रिलीज ही न हो पाए, लेकिन उसका इस मामले में असफल होना तय था और ऐसा ही हुआ। यदि किसी निर्देशक ने एन एक्सीडेंटल चीफ मिनिस्टर फिल्म रिलीज करनी चाही होती तो शायद वह संभव नहीं होता। सवाल किसी पार्टी विशेष की विचारधारा का नहीं है, बल्कि सत्ता के चरित्र का है, जो अपने थोड़े से विरोध में या विरोध की आशंका मात्र से सिहरकर अनुदारता के क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो यही कांग्रेस आपातकाल के दौरान आंधी फिल्म के प्रदर्शन पर रोक नहीं लगाती, जो प्रत्यक्षत- बायोग्राफी ही नहीं थी, इंदु सरकार की तरह। हां, उसमें इंदिरा गांधी के जीवन की झलक अवश्य थी। उरी और मणिकर्णिका के विषय तो बिल्कुल अलग-अलग हैं, लेकिन इन दोनों का उद्देश्य बिल्कुल एक है- राष्ट्रवाद की भावना की लहर उठाना। उरी जहां पाकिस्तान के खिलाफ सैनिकों के शौर्य को बयान करती है वहीं मणिकर्णिका साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध वीरतापूर्ण संघर्ष को दिखाती है। एक में राष्ट्र की रक्षा का आवेग है तो दूसरे में स्वतंत्रता का उत्सर्ग। आज के अपेक्षाकृत यथार्थवादी दौर में तो यह बात और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है कि राजनीतिक सिनेमा अपनी घटनागत सत्यता के माध्यम से दर्शकों की विश्वसनीयता को कहां तक हासिल कर पाता है? आगामी लोकसभा चुनाव के संदर्भ में राजनीतिक दलों के विचारधारात्मक स्वरूप को देखते हुए इस राष्ट्रवादी भावना का उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है। यह न तो कोई गलत बात है और न ही चिंताजनक। अवैधानिक होने का तो सवाल ही नहीं उठता। ध्यान रहे कि जब सिनेमा नामक आश्चर्यजनक विधा को जन्म लिए दो दशक ही हुए थे तब ग्रीफिथ ने 1915 में द बर्थ ऑफ नेशन फिल्म बनाकर राजनीति के साथ सिनेमा के घनिष्ठ रिश्ते की खुलेआम घोषणा कर दी थी। यदि अमेरिका में ओबामास अमेरिका और हिलेरीस अमेरिका- द सीक्रेट हिस्ट्री ऑफ डेमोक्रेटिक पार्टी जैसी फिल्में बन सकती हैं तो भारत में क्यों नहीं? भारत में भी अमेरिका की तरह कुछ क्यों नहीं होना चाहिए? ऐसा होने पर ही भारत दुनिया के सामने सीना ठोककर स्वयं को केवल सबसे बड़ा लोकतंत्र ही नहीं, बल्कि सबसे सच्चा उदारवादी लोकतांत्रिक देश कह सकेगा। महिलाएं समाज और परिवार की धुरी हैं, लेकिन समानता का इंसानी हक आज भी हासिल नहीं हुआ इससे भी बड़ी बात यह कि भारत में सही अर्थों में एक आलोचनात्मक राजनीतिक चेतना जागृत हो सकेगी। राजनीतिक दलों पर भी उसका अप्रत्यक्ष सकारात्मक नैतिक दबाव पड़ेगा, क्योंकि उन्हें इस बात का भय रहेगा कि उन पर फिल्में बनाई जा सकती हैं। मुश्किल यह है कि जिस देश में पद्मावत को लेकर इतनी बड़ी राजनीति की जा सकती है वहां यह कहना कठिन है कि राजनीतिक फिल्मों का राजनीतिक परिदृश्य क्या हो सकता है? ध्यान रहे कि अधिकांश फिल्मों में राजनीति होती है। फिल्मों पर भी जमकर राजनीति होती है। फिल्म-जगत की भी अपनी राजनीति होती रहती है। ऐसे में यह जरूरी है कि सशक्त राजनीतिक फिल्मों की शुरुआत की जाए।

भारतीयता से दूर भागते वामपंथी

(जी.एन.एस.) दो वर्ष पूर्व मेरा और दत्तात्रेय होसबाले जी का जेएलएफ के लिए निमंत्रण वामपंथियों के घोर विरोध के बावजूद भी कायम रखना या इस वर्ष रमेश पतंगे जी को आमंत्रित करना यह आयोजकों का निर्णय मेरे परिचित परिवार की एक छात्र जयपुर में पढ़ती है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में वह वॉलंटियर के नाते जुड़ी थी। उसने अपना अनुभव बताया कि सभी सत्रों में वक्ताओं में और प्रबंधकों में भी 'लेफ्ट' का साफ प्रभाव और वर्चस्व दिखा। मुझे यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ, अपेक्षित था। उसने एक और अनुभव बताया कि उनकी टीम लीडर जो एक वामपंथी एक्टिविस्ट है, ने बातचीत में कहा कि इस बार हमने प्रसिद्ध गीतकार प्रसून जोशी को फेस्टिवल में नहीं बुलाया, क्योंकि वह 'राइटविंगर' हो गए हैं। छात्र ने जब पूछा कि क्या 'राइटविंगर' इतना बुरा या खराब है? इस पर टीम लीडर ने कहा कि जब प्रसून जी ने 'रंग दे बसंती' फिल्म के लिए गीत लिखे तब तो ठीक था, कारण उसमें क्रांति की बात थी, पर अब उन्होंने 'मणिकर्णिका' के लिए गीत लिखे हैं। उस छात्र ने पूछा कि इसमें आपत्तिजनक क्या है? वामपंथी एक्टिविस्ट का जवाब था, इस देश में फिल्म, लिटरेचर, ड्रामा, गीत इन सब की शुरुआत 'लेफ्ट' से ही हुई है। अन्य किसी का ये काम नहीं है। अब लिट-फेस्ट में किसको बुलाना और किसको नहीं, यह आयोजकों का अधिकार है। बांग्लादेश से भी बुरे हाल में भारत का दुश्मन, क्या कंगाल हो जाएगा पाकिस्तान! दो वर्ष पूर्व मेरा और दत्तात्रेय होसबाले जी का जेएलएफ के लिए निमंत्रण वामपंथियों के घोर विरोध के बावजूद भी कायम रखना या इस वर्ष रमेश पतंगे जी को आमंत्रित करना, यह आयोजकों का निर्णय मेरे परिचित परिवार की एक छात्र जयपुर में पढ़ती है। जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल में वह वॉलंटियर के नाते जुड़ी थी। उसने अपना अनुभव बताया कि सभी सत्रों में वक्ताओं में और प्रबंधकों में भी 'लेफ्ट' का साफ प्रभाव और वर्चस्व दिखा। मुझे यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ, अपेक्षित था। उसने एक और अनुभव बताया कि उनकी टीम लीडर जो एक वामपंथी एक्टिविस्ट है, ने बातचीत में कहा कि इस बार हमने प्रसिद्ध गीतकार प्रसून जोशी को फेस्टिवल में नहीं बुलाया, क्योंकि वह 'राइटविंगर' हो गए हैं। छात्र ने जब पूछा कि क्या 'राइटविंगर' इतना बुरा या खराब है? इस पर टीम लीडर ने कहा कि जब प्रसून जी ने 'रंग दे बसंती' फिल्म के लिए गीत लिखे तब तो ठीक था, कारण उसमें क्रांति की बात थी, पर अब उन्होंने 'मणिकर्णिका' के लिए गीत लिखे हैं। उस छात्र ने पूछा कि इसमें आपत्तिजनक क्या है? वामपंथी एक्टिविस्ट का जवाब था, इस देश में फिल्म, लिटरेचर, ड्रामा, गीत इन सब की शुरुआत 'लेफ्ट' से ही हुई है। अन्य किसी का ये काम नहीं है। अब लिट-फेस्ट में किसको बुलाना और किसको नहीं, यह आयोजकों का अधिकार है। बांग्लादेश से भी बुरे हाल में भारत का दुश्मन, क्या कंगाल हो जाएगा पाकिस्तान! दो वर्ष पूर्व मेरा और दत्तात्रेय होसबाले जी का जेएलएफ के लिए निमंत्रण वामपंथियों के घोर विरोध के बावजूद भी कायम रखना या इस वर्ष रमेश पतंगे जी को आमंत्रित करना, यह आयोजकों का निर्णय है। इस वर्ष भी आयोजकों ने प्रसून जोशी जी को वाम विरोध के बावजूद निमंत्रित किया, पर स्वास्थ्य कारणों से उन्हें अपने आने का कार्यक्रम रद करना पड़ा, किंतु वामपंथी सोच यदि यह है कि अब प्रसून जोशी जी को इस कारण नहीं बुलाना चाहिए, क्योंकि 'मणिकर्णिका' के लिए गीत लिखकर वे 'राइटविंगर' हो गए हैं तो यह वैचारिक संकुचितता अभारतीय है। यह विसंगति ध्यान देने योग्य है कि अहंकार और अनुदार वृत्ति वामपंथ का स्थाई चरित्र है, किंतु ये लोग अपने आप को उदार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के रक्षण कर्ता आदि कहते नहीं अघाते। अधिकतर वामपंथी दूसरों के पक्ष को सुनना भी निषिद्ध या पाप मानते हैं। इसलिए जयपुर लिट फेस्ट में जब दो वर्ष संघ के पदाधिकारियों को बुलाया गया था तो इन वामपंथियों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया था। जिस संघ का जनसमर्थन और जनसहभाग अनेक विरोध और अवरोधों के बावजूद अपने कार्यकर्ताओं के बलबूते लगातार बढ़ रहा है उस संघ को अपनी बात रखने का मौका देने का विरोध ऐसे असहिष्णु वामपंथी नेता कर रहे थे जिनका जनाधार लगातार घट रहा है। दूसरों की बात सुनना या समझने का प्रयास करना उसे स्वीकार करना नहीं होता, परंतु इन अलोकतांत्रिक विचारों के असहिष्णु लोगों की दुनिया में वामपंथी विचारों के सिवाय अन्य विचार के लिए स्थान ही नहीं दिखता। इसीलिए सीताराम येचुरी और उनके कुछ वामपंथी नेताओं ने जयपुर लिटफेस्ट का इसलिए बहिष्कार कर दिया था कि आयोजकों ने संघ के लोगों को बुलाया। फिल्मकार एवं लेखक विवेक अग्निहोत्री ने 'अर्बन नक्सल्स' नामक पुस्तक में लिखा है कि 'बुद्धा इन ट्रैफिक जाम' फिल्म की स्क्रीनिंग के लिए जब वह जादवपुर यूनिवर्सिटी गए तो वहां उनका विरोध हुआ, उनकी कार में तोड़-फोड़ हुई, उन पर भी शारीरिक हमला हुआ। यह हिंसक विरोध करने वाली सभी वामपंथी छात्रएं थीं। उनका नारा था 'ब्लडी फासिस्ट ब्राह्मण वापस जाओ'। विवेक अग्निहोत्री जब तक साम्यवाद का विरोध नहीं कर रहे थे तब तक वे एक प्रतिष्ठित फिल्म निर्माता थे, कलाकार थे, लेकिन नक्सलियों का पर्दाफाश करते ही वे 'ब्लडी, फासिस्ट और ब्राह्मण' हो गए। उन आंदोलनकारियों से अग्निहोत्री ने कहा कि 'मैं अपनी फिल्म दिखाने आया हूं। आपको नहीं देखनी है तो मत देखिए।' इस पर कहा गया, 'आप यहां कोई फिल्म कभी भी नहीं दिखा सकते, यहां किसी दूसरे विचार के लिए स्थान ही नहीं है।' यह प्रसंग मार्च 2016 का है। वापस टीम लीडर के बयान पर लौटते हैं। ध्यान दीजिए कि प्रसून जोशी ने 'मणिकर्णिका' फिल्म के लिए कौन-सा गीत लिखा है? उस गीत के शब्द हैं, 'मैं रहूं या ना रहूं, भारत ये रहना चाहिए।' यह इतना सुंदर गीत है कि हर भारतीय के मन में देशभक्ति की भावनाओं का उभार आए बिना नहीं रहेगा। इसमें किसी को भी आपत्ति क्यों होनी चाहिए, किंतु वामपंथियों को आपत्ति है? उन्हें 'भारत तेरे टुकड़े होंगे, इंशा अल्लाह इंशा अल्लाह' या 'भारत की बर्बादी तक जंग चलेगी, जंग चलेगी' जैसे नारों पर आपत्ति नहीं होती। बार-बार वह भूमि को नमन करते और उसकी जय-जयकार करते जाते। जन-समुदाय इस दृश्य को देखकर आत्म-विभोर हो उठा। प्रश्न उठता है कि भारत में जन्म लेकर, भारत की ही भूमि का अन्न, जल, वायु भक्षण कर, भारत के कर दाता द्वारा पोषित उच्च शैक्षिक संस्था में पढ़कर ऐसी एक जमात फल-फूल क्यों रही है जिसे भारत तेरे टुकड़े होंगे या भारत की बर्बादी जैसा नारा तो मंजूर है, पर 'मैं रहूं या ना रहूं, भारत ये रहना चाहिए' से चिढ़ है? भारत के देशभक्त लोगों के लिए सोचने का समय आया है। इस 'अभारतीय' सोच को अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थ के लिए प्रोत्साहन या संरक्षण देने या वामपंथी विचारकों को अपनी दलीय बौद्धिक गतिविधि 'आउटसोर्स' करने वाले राजनीतिक दल समय रहते यह धोखा समझ लें नहीं तो भारत की देशभक्त जनता को ऐसे दलों के बारे में सोचने हेतु बाध्य होना पड़ेगा।

कन्नौज से चुनाव लड़ेंगी डिंपल

अखिलेश यादव ने जारी की तीन उम्मीदवारों की लिस्ट

एसपी ने ३७ सीटों में से ६ सीटों के बाद तीन और लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा की

(संपूर्ण समाचार सेवा) लखनऊ, लोकसभा चुनाव (२०१९) को देखते हुए उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी (एसपी) और बहुजन समाज पार्टी के बीच गठबंधन हुआ। एसपी ने अपने खाते की ३७ सीटों में से ६ सीटों के बाद तीन और लोकसभा सीटों पर प्रत्याशियों के नाम की घोषणा कर दी है। इस तरह एसपी कुल ९ सीटों पर अपने प्रत्याशियों के नाम का ऐलान कर चुकी है। बता दें कि समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने ऑफिशल अकाउंट से एक ट्वीट किया है। अखिलेश यादव ने ट्वीट किया, इंटरनैशनल विमिंज डे के मौके पर समाजवादी पार्टी ने समानता के अधिकार पर किए गए वादे को निभाते हुए इन महिलाओं को लोकसभा चुनाव में बतौर प्रत्याशी चुनावी रण में उतारा है। यह ऐलान करते हुए हमें गर्व की अनुभूति हो रही है। इस तस्वीर में अखिलेश यादव के साथ उनकी पत्नी और वर्तमान में कन्नौज से सांसद डिंपल यादव नजर आ रही हैं। एसपी प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने बताया कि डिंपल यादव कन्नौज से फिर चुनावी मैदान में उतरेंगी। इनके इतर लखीमपुर खीरी से पूर्वी वर्मा और हरदोई से ऊषा वर्मा को उम्मीदवार बनाया गया है। समाजवादी पार्टी ने बदायूं सीट से धर्मेंद्र यादव, फिरोजाबाद से पार्टी महासचिव राम गोपाल यादव के पुत्र अक्षय यादव, बहराइच से शब्बीर बाल्मीकि, रॉबर्ट्सगंज से भाईलाल कोल और इटावा सीट से कमलेश कठेरिया को उम्मीदवार बनाया है। उधर, समाजवादी पार्टी के संरक्षक मुलायम सिंह यादव को मैनपुरी से चुनावी मैदान में उतारा गया है। बता दें कि कन्नौज लोकसभा सीट से वर्ष २०१४ में डिंपल यादव महज १९ हजार ९ सौ सात वोटों के अंतर से जीती थीं। उनका निकटतम प्रतिद्वंद्वी से जीत का अंतर महज १.८० फीसदी मतों का था। बात की जाए लखीमपुर खीरी लोकसभा सीट की तो यहां वर्ष २०१४ में बीजेपी के अजय कुमार मिश्रा ने १ लाख १० हजार दो सौ ७४ वोटों के अंतर से जीत अपने नाम की थी। २०१४ में हरदोई लोकसभा सीट से अंशुल वर्मा ने बीजेपी के बैनर तले ८१,३४३ मतों के अंतर से जीत दर्ज की थी।

आप विधायक के परिसरों पर छापेमारी

नरेश बालियान के परिसरों पर आईटी की छापेमारी

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने आम आदमी पार्टी के विधायक नरेश बालियान के परिसरों पर छापेमारी की है। यह जानकारी न्यूज एजेंसी एएनआई ने सूत्रों के हवाले से दी है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो आप विधायक के पास से आयकर विभाग ने दो करोड़ रुपये पकड़े हैं। विभाग के अधिकारी बालियान से पूछताछ कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि इनकम टैक्स विभाग के अधिकारी एक स्थान पर छापा मारने के लिए पहुंचे थे। इसी दौरान आप नेता बालियान करीब दो करोड़ रुपये लेकर वहां पहुंचे। आयकर अधिकारी उनसे पूछताछ कर रहे हैं। बताया जा रहा है कि इनकम टैक्स के अधिकारी नरेश बालियान से इस पैसे के स्रोत को लेकर पूछताछ कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो अब नरेश बालियान के द्वारा स्थित परिसरों पर भी छापेमारी की जा रही है। वहीं अभी तक आम आदमी पार्टी की तरफ से इस संबंध में कोई बयान नहीं आया है। लोक सभा चुनाव से ठीक पहले आयकर विभाग की तरफ से की जा रही छापेमारी काफी अहम मानी जा रही है।

आधुनिक युग में पूर्वजों को अपनी भाषा में दें डिजिटल श्रद्धांजलि, भारत में नई शुरूआत

नई दिल्ली [अंशु सिंह]। हम अपने पूर्वजों व दिवंगत रिश्तेदारों को याद करने के लिए उनके समाधि स्थलों पर जाते हैं या अखबारों में शोक संदेश देते हैं। आधुनिक युग में अब न सिर्फ डिजिटली उन्हें याद कर सकेंगे, बल्कि अपने परिवार का डिजिटल फैमिली ट्री भी तैयार कर सकते हैं। गुजरात के विवेक व्यास और विमल पोपट द्वारा शुरू किया गया श्रद्धांजलि प्लेटफॉर्म अपने आपमें एक अद्वितीय मंच है। यह देश का पहला जीवन वृत्तांत पोर्टल है, जहां आप अपने पूर्वजों, प्रियजनों को याद कर सकते हैं। उनसे जु ?ी यादों को तस्वीरों के जरिये साझा कर सकते हैं। एक बार ऑनलाइन अकाउंट क्रिएट होने पर आप अपने रिश्तेदारों को हर साल दिवंगत की पुण्यतिथि पर एक रिमाइंडर संदेश भी भेज सकते हैं, जिससे कि वे अपने संदेश पोस्ट कर सकें। विवेक के अनुसार, पोर्टल का शुरुआत एक दिलचस्प कहानी के साथ हुआ है। वे बताते हैं, '2010-11 में एक दिन हम लोग राजकोट में सड़क किनारे की दुकान पर चाय-समोसे खाने के लिए रुके। दुकानदार ने जिस अखबार में समोसे लपेटकर दिए थे, उसमें लोगों के शोक संदेश छपे थे। हमें अच्छा नहीं लगा। सोचा कि कैसे लोगों की यादें कुछ घंटे ही रहती हैं और अखबार रद्दी बन जाता है। हमने इसके विकल्प के बारे में सोचना शुरू किया, जिससे यादों को हमेशा के लिए सहेजा जा सके। विवेक ने इंटरनेट पर भारत के मेमोरियल वेबसाइट्स एवं ऑनलाइन ओबिच्युरी एडवर्टिजमेंट सर्विस को लेकर काफी सर्च किए। उन्हें ऐसी कोई वेबसाइट नहीं मिली। तब इन्होंने लोगों से बात की। अखबार के विकल्प को लेकर सर्वे किया और आखिर में डिजिटल वर्ल्ड में एक संभावना दिखाई दी। इस तरह, तकनीकी क्षेत्र से ताल्लुक न रखने के बावजूद विवेक ने अपने दोस्त के साथ मिलकर श्रद्धांजलि डॉट कॉम की शुरुआत की। यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है, जहां 24 भाषाओं में कंटेंट (बायोग्राफी, फैमिली ट्री, वीडियो, फोटो आदि) इत्यादि अपलोड, स्टोर, प्रकाशित और साझा कर सकते हैं। अपनी भाषा में नमन, श्रद्धांजलि व्यक्त कर सकते हैं। पूर्वजों की जन्मतिथि, पुण्यतिथि तथा शोक संदेश भी ज्ञापित कर सकते हैं। यह पूरी तरह से विज्ञापन मुक्त मंच है। हां, इसके लिए वार्षिक या आजीवन सब्सक्रिप्शन लेना होता है। कुछ समय पूर्व आइआइएम, अहमदाबाद और एमडीआइ गुरुग्राम जैसे प्रमुख बि ?नेस कॉलेजों ने श्रद्धांजलि डॉट कॉम पर अपनी केस स्टडीज भी प्रकाशित की हैं। विवेक की मानें, तो एकल परिवारों के आधुनिक दौर में लोगों का अपने एक्सटेंडेड रिश्तेदारों के बारे में जानना, किसी चुनौती से कम नहीं। कई लोग तो अपने दादा-दादी या नाना-नानी तक से नहीं मिले होते हैं। वे सेलिब्रेटीज, नेताओं-अभिनेताओं के परिवारों का तो इतिहास जानते हैं, लेकिन अपने पूर्वजों या उनकी जड़ों से वाकिफ नहीं होते। आंकड़े बताते हैं कि भारत में हर साल औसतन 70 लाख लोग अपने प्राण त्यागते हैं। वहीं, किसी अपने को खोने के कारण 2 करोड़ 80 लाख लोग प्रभावित होते हैं। इस तरह, जाने वाली हर पीढ़ी के साथ उनका इतिहास भी गुम हो जाता है। विदेशों में कई सारे ओबिच्युरी वेबसाइट्स हैं। जैसे, न्यूयॉर्क में ऑनलाइन ओबिच्युरी कंपनी 'मोरनर्स लेन' है। 'हेवनअड्रेस' जैसी ऑनलाइन मेमोरियल कम्युनिटी है। यहां गुजर चुके परिजनों को ऑनलाइन मेमोरियल से लेकर वर्चुअल फूल अर्पित किए जा सकते हैं।

पाकिस्तान बोला, कार्रवाई हो

भारतीय क्रिकेट टीम ने पहनी मिलिटरी कैप

(संपूर्ण समाचार सेवा) जवाहर चावड़ा ने बीजेपी जॉइन कर लिया हैं। जवाहर चावड़ा कमलम पहुंचकर गृह राज्य मंत्री प्रदिपसिंह जाडेजा के हाथ मीठाई खाई और भाजपा का खेस भी पहना। जवाहर चावड़ा को केबिनेट मंत्री पद मिले ऐसी संभावना है। जवाहर चावड़ा सौराष्ट्र में आहिर समाज का प्रभुत्व है। चावड़ा वर्ष १९९० में पहलीबार विधायक बने थे। फिर २००७, २०१२ और २०१७ में भी चुनाव जीतकर चौथीबार विधायक बनने थे। पिछले कुछ दिनों से गुजरात कांग्रेस में काफी घमासान मचा हुआ है। नई दिल्ली, पाकिस्तान के विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने भारतीय क्रिकेट टीम के मिलिटरी कैप पहनकर मैच खेलने पर आपत्ति जताई है। शुक्रवार को रांची में खेले गए एक दिवसीय मैच में भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने पुलवामा हमले के विरोध में मिलिटरी कैप पहनी थी। खिलाड़ियों ने शहीदों के परिवार की मदद का भी संदेश दिया लेकिन पाकिस्तान के मंत्री को यह बात नागवार गुजरी। रेडियो पाकिस्तान के मुताबिक पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने कहा कि पाकिस्तान भारतीय खिलाड़ियों के इस फैसले का बदला लेगा। कुरैशी ने आईसीसी से मांग की है कि भारतीय टीम के खिलाफ कार्रवाई की जाए। पाकिस्तान के सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने ट्वीट करके कहा, अगर भारतीय टीम को रोका नहीं गया तो हम वर्ल्ड कप में काली पट्टी बांधकर खेलेंगे। शुक्रवार को खिलाड़ियों ने सेना के सन्मान में आर्मी कैप पहनी थी। ये टोपियां खुद महेंद्र सिंह धोनी ने टीम इंडिया के खिलाड़ियों को सौंपी थी। भारतीय सेना के पराक्रम, बलिदान और साहस का सन्मान करते हुए बीसीसीआई ने यह कदम उठाया है। इतना ही नहीं ओस्ट्रेलिया के पिंक टेस्ट और साउथ अफ्रीका के पिंक वनडे के तर्ज पर अब टीम इंडिया हर साल एक मैच इस टोपी के साथ खेला करेगी। कप्तान विराट कोहली ने बताया था कि टीम इस मैच की फीस नैशनल डिफेंस फंड में जमा करेगी जिससे शहीदों के परिवार की मदद की जा सके। उन्होंने लोगों से भी शहीदों के परिवार की मदद करने की अपील की।

रांची में खेले गए मैच में भारतीय टीम के खिलाड़ियों ने पुलवामा हमले के विरोध में मिलिटरी कैप पहनी

विराट कोहली बने चौथे भारतीय

कोहली ने कप्तान के तौर पर वनडे में पूरे किए ४००० रन

(संपूर्ण समाचार सेवा) नई दिल्ली, भारतीय कप्तान विराट कोहली ने रांची में शुक्रवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज के तीसरे वनडे में एक और उपलब्धि हासिल की। उन्होंने जैसे ही मैच में अपने २७ रन पूरे किए, वह कप्तान के रूप में वनडे इंटरनैशनल क्रिकेट में ४००० रन पूरे करने वाले चौथे भारतीय बन गए। कोहली ने इसके लिए ६३ पारियां खेलीं। इस बीच वह वनडे इंटरनैशनल में कप्तान के तौर पर सबसे तेजी से ४००० रन पूरे करने वाले खिलाड़ी भी बने। उनके बाद साउथ अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डि विलियर्स का नंबर आता है जिन्होंने ७७ पारियां खेलीं। भारतीयों की बात करें तो विराट से पहले २०० वनडे मैचों में टीम इंडिया की कमान संभालने वाले महेंद्र सिंह धोनी ने ६६४१, मोहम्मद अजहरुद्दीन ने ५१६९ और सौरभ गांगुली ने कप्तान के रूप में ५१०४ रन बनाए हैं। नागपुर वनडे में अपने करियर का ४०वां शतक जड़ने वाले कोहली ने चौके के साथ यह उपलब्धि हासिल की। उन्होंने स्टॉयनिस की गेंद पर कवर की दिशा में शानदार चौका जड़ा और यह अपने नाम एक और रेकॉर्ड कर लिया। भारतीय रन मशीन विराट वनडे में कप्तान के तौर पर ४००० रन पूरे करने वाले ओवरऑल १२वें क्रिकेटर बने हैं।

विराट कोहली वनडे में कप्तान के तौर पर ४००० रन पूरे करने वाले ओवरऑल १२वें क्रिकेटर बने हैं

राजस्थान में एक कार्यक्रम पहुंचे राजनाथ सिंह

कश्मीरी हमारे साथ थे, हैं और रहेंगे : राजनाथ सिंह

लखनऊ में एक कश्मीरी युवक की पिटाई किए जाने के मामले पर केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ ने नाराजगी जताई

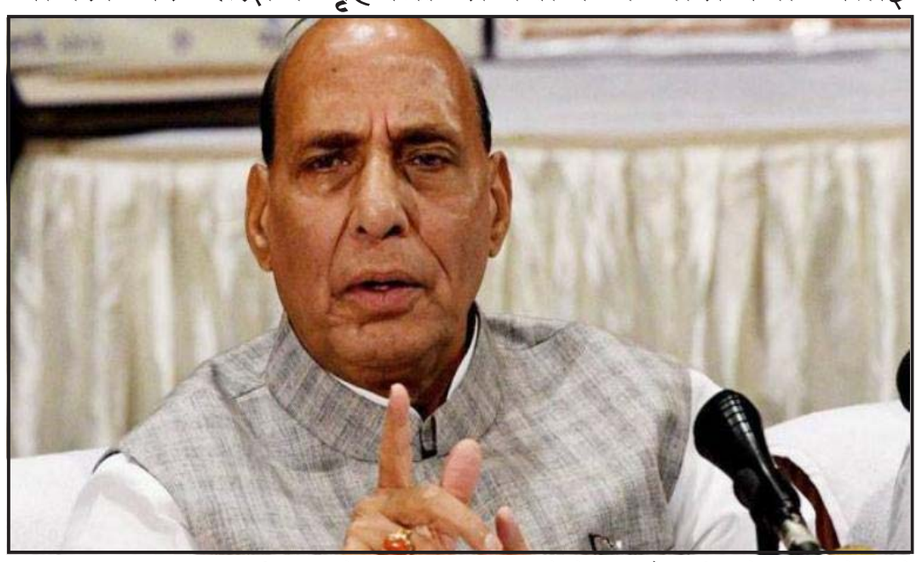

(संपूर्ण समाचार सेवा) ब्यावर, लखनऊ में एक कश्मीरी युवक की पिटाई किए जाने के मामले पर लखनऊ के सांसद और केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने नाराजगी जताई है। राजनाथ सिंह ने कहा कि कश्मीरी हमारे साथ थे, हैं और रहेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि कोई अगर कश्मीरी युवकों को परेशान करे तो बीजेपी कार्यकर्ता उसके साथ खडे हों। इससे पहले पीएम मोदी ने भी इस घटना को सिरफिरे युवकों की हरकत बताया। राजस्थान में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राजनाथ सिंह ने कहा, मैं पूरे देश से कहना चाहता हूं कि कश्मीर के लोग भी हमारे साथ हैं, थे और रहेंगे। मैंने राज्यों के मुख्यमंत्रियों से कश्मीरी छात्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कहा है। बीजेपी कार्यकर्ताओं की यह जिम्मेदारी बनती है कि यदि कोई कश्मीरी छात्रों को परेशान करता है तो आप उनके साथ खड़े हों। इस दौरान पीएम ने लखनऊ में पिछले दिनों कश्मीरियों के साथ हुई मारपीट की घटना का भी जिक्र किया और इसके लिए सीएम की तारीफ की। पीएम ने कहा, देश में एकता का वातावरण बनाए रखना बहुत अहम है। लखनऊ में कुछ सिरफिरे लोगों ने हमारे कश्मीरी भाइयों के साथ जो हरकत की थी, उस पर यूपी सरकार ने त्वरित कार्रवाई की है। मैं अन्य राज्य सरकारों से भी आग्रह करूंगा कि जहां भी ऐसी हरकत करने की कोई कोशिश करे, उस पर कठोर कार्रवाई की जाए। बता दें कि लखनऊ में सड़क किनारे ड्राई फ्रूट्स और मसाले बेचने वाले एक युवक को कुछ लोगों ने मारा-पीटा था। युवक के साथ यह बर्ताव देखकर कुछ लोगों ने बीच-बचाव किया था। विडियो वायरल होने के बाद पुलिस ऐक्शन में आई और आरोपियों को गिरफ्तार किया था।

अहमदाबाद कलेकटर ऑफिस में महेसुल विभाग के कर्मियों के द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया था। (संपूर्ण समाचार सेवा)

बाबू बजरंगी को सुप्रीम कोर्ट से मिली जमानत

नई दिल्ली, एजेंसी। 2002 Gujarat riots case- सुप्रीम कोर्ट ने बाबू बजरंगी को जमानत दे दी है। बाबू बजरंगी को नरोदा पाटिया मामले में दोषी ठहराया गया था। बजरंगी को स्वास्थ्य कारणों से जमानत मिली है। बाबू बजरंगी का असली नाम बाबूभाई पटेल है और उनका संबंध बजरंग दल से रहा है। गुजरात में साल 2002 में साबरमती एक्सप्रेस कांड के बाद हुए दंगों को लेकर बाबू बजरंगी हमेशा चर्चा के केंद्र में रहे हैं। साल 2007 में एक स्टिंग ऑपरेशन सामने आया था, जिसमें वह नरोदा पाटिया नरसंहार में अपनी भूमिका की बात कही थी। साल 2002 के दंगों के बाद वह विश्व हिंदू परिषद् में शामिल हो गए और बाद में वह शिवसेना का हिस्सा बन गए थे। बाबू बजरंगी ने तहलका के इस स्टिंग ऑपरेशन में कहा था कि उन्होंने वीर माहाराणा प्रताप जैसा कुछ काम किया। इस स्टिंग में बजरंगी ने बताया था कि उन्होंने अहमदाबाद में 28 फरवरी 2002 को हुए नरसंहार के लिए भीड़ को उकसाने का काम किया था। यही नहीं उन्होंने बम और बंदूकें मुहैया कराने की बात भी स्वीकार की थी। स्टिंग ऑपरेशन में बाबू बजरंगी ने नरसंहार का कारण भी बताया था। उन्होंने 27 फरवरी, 2002 को गधरा स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस में 59 कारसेवकों को जलाए जाने से हुई मौत को दंगों का कारण बताया था। उन्होंने कहा, जो कुछ भी हुआ, मैं उसे बर्दाश्त नहीं कर सका और अगले ही दिन हमने उन्हें करारा जवाब दिया। बाबू बजरंगी ने इस स्टिंग में स्वीकार किया कि वह नरसंहार के वक्त खुद वहां मौजूद थे। इस स्टिंग में बजरंगी ने बताया था कि उन्होंने अहमदाबाद में 28 फरवरी 2002 को हुए नरसंहार के लिए भीड़ को उकसाने का काम किया था। उन्होंने कहा, गोधरा (साबरमती एक्सप्रेस) की घटना के बाद वह मैं नरोदा लौटा और हमने प्रतिशोध लिया।

साबरमती रिवरफ्रंट पर बड़ी मात्रा में पक्षी दिख रहे है। (संपूर्ण समाचार सेवा)

पाक. को उन्हीं की भाषा में जवाब देंगे : मोदी

आतंक के आकाओं को समझ आ गया कि यह नया भारत है

जब एक समय पाकिस्तान कह रहा था प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मारा तब यहां सवाल पूछे जा रहे है : रिपोर्ट

(संपूर्ण समाचार सेवा) नोएडा,

पुलवामा आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के बालाकोट में भारतीय एयर स्ट्राइक का सबूत मांगने वालों पर पीएम नरेंद्र मोदी ने आज जमकर निशाना साधा । पीएम ने पाकिस्तान और आतंक पर सिलसिलेवार हमला करते हुए टुकडे गैंग को भी आड़े हाथों लिया । पीएम ने कहा कि जिस समय पाकिस्तान भारतीय एयर स्ट्राइक से परेशान था उस समय टुकड़े–टुकड़े गैंग के लोग इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि यह कौन सा बालाकोट है। उन्होंने कहा कि जब एक समय पाकिस्तान कह रहा था मोदी ने मारा तब यहां सवाल पूछे जा रहे है। पीएम ने विपक्षी पार्टियों पर हमला बोलते हुए कहा, आज देश के भीतर अपनेआप को बड़ा नेता मानने वाले लोग जो भाषा बोल रहे हैं, उससे देश के दुश्मनों को ताकत मिल रही है। देश के जवान के पराक्रम पर सवाल उठा रहे हैं और उस पर पड़ोस में तालिया पड़ती हैं। टुकड़े–टुकड़े गैंग की चाल ऐसी है कि एयर स्ट्राइक के बाद पाकिस्तान तो परेशान था, लेकिन ये लोग सिर्फ इसी बात पर चर्चा कर रहे थे कि यह भारत का बालाकोट है या पाकिस्तान का बालाकोट है। ऐसे लोगो की बातों पर भरोसा मत करिए। पीएम मोदी ने कहा कि २०१६ में पहली बार हमारी सरकार ने आतंक के आकाओं को उस भाषा में जवाब दिया, जिसमें वह समझते हैं। पीएम ने कहा, उरी के बाद हमने सर्जिकल स्ट्राइक की तो ये लोग सबूत मांग रहे थे। अब पुलवामा हमला हुआ। भारत के वीरों ने जो काम किया, वैसा काम दशकों तक नहीं हुआ है। हमारे वीरों ने आतंकियों को घर में घुसकर मारा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आतंकियों को भारत से ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

इस बैंक के क्रेडिट कार्ड यूजर को लेट पेमेंट पड़ेगा भारी, 1 अप्रैल से बढ़ जाएगा चार्ज

(जी.एन.एस.) नई दिल्ली ।निजी क्षेत्र के प्रमुख बैंक एचडीएफसी ने क्रेडिट कार्ड के लेट पेमेंट चार्जेज में संशोधन करने की घोषणा की है। अब बैंक लेट पेमेंट पर पहले की तुलना में ज्यादा शुल्क वसूलेगा।नई दरें एक अप्रैल 2019 से लागू होंगी। इसलिए एचडीएफसी क्रेडिट कार्ड यूजर्स को सलाह दी जाती है कि वो ड्यू डेट से पहले ही अपने बकाए का भुगतान कर दें ताकि उन्हें आर्थिक नुकसान न उठाना पड़े। क्रेडिट कार्ड पर लेट पेमेंट चार्ज तब लगाया जाता है जब कार्डधारक ड्यू डेट तक अपने बकाए के न्यूनतम भुगतान में भी असफल रहता है। हर क्रेडिट कार्ड पर न्यूनतम भुगतान राशि कुल बकाए की 5 फीसद होती है। इसलिए लेट पेमेंट चार्ज से बचने के लिए कार्डधारक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ड्यू डेट से पहले कम से कम बकाया राशि में से न्यूनतम राशि का भुगतान तो कर ही दिया जाए। अगर आप ऐसा करते हैं तो फिर आपको एचडीएफसी क्रेडिट कार्ड कस्टमर केयर में फोन करने की जरूरत नहीं होगी कि वो आपका चार्ज माफ कर दे और न ही आपको उसे देरी का कारण बताने की जरूरत होगी। ड्यू डेट के समय कार्डहोल्डर के पास तीन विकल्प होते हैं। या तो कुल बकाए के 5 फीसद हिस्से का भुगतान कर दें, आंशिक भुगतान कर दे और या फिर पूरे क्रेडिट कार्ड ड्यू का भुगतान कर दे। सिर्फ उसी सूरत में जब पूरे कार्ड बिल के अमाउंट का भुगतान कर देता है तो ब्याज नहीं वसूला जाता है।

ग्रेटर नोएडा में बोले पीएम– हर बेइमान को मोदी से कष्ट, अब एयर स्ट्राइक का मांग रहे सबूत

(जी.एन.एस.) नई दिल्ली/नोएडा, ।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को ग्रेटर नोएडा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किलॉजी के साथ नोएडा सिटी सेंटर से इलेक्ट्रॉनिक सिटी मेट्रो का भी उद्घाटन किया। इस मौके पर उन्होंने जनसभा को संबोधित करते हुए पुरानी सरकारों खासकार केंद्र में सत्तासीन रही कांग्रेस सरकार को आड़े हाथों लिया। उन्होंने ग्रेटर नोएडा में आयोजित जनसभा में कहा कि जिस कोयला खान आवंटन में कांग्रेस सरकार ने घोटाले किए उसको भाजपा सरकार ने पारदर्शी बनाया। इस आवंटन में करोड़ों का घोटाला हुआ था उसी कोयला खान आवंटन को भाजपा सरकार ने पारदर्शी बनाया। विरोधियों को चुनौती भरे अंदाज में कहा –मैं किसी को घोटाले नहीं करने दूंगा और घोटाले करने वाले को मैं छोड़ूंगा भी नहीं। अपने संबोधन की शुरुआत में पीएम मोदी ने कहा कि यहां (सभा स्थल) पर मोदी–मोदी के नारे लग रहे हैं, इससे विरोधी दलों की नींद उड़ गई है। इशारों–इशारों में सपा–बसपा सरकारों पर हमला करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि पहले नोएडा की पहचान भूमि आवंटन व टेंडर घोटाले के रूप में होती थी। पुरानी सरकारों में नोएडा–ग्रेटर नोएडा को खूब लूटा गया, लेकिन अब नोएडा की पहचान विकास कार्यों से हो रही है। देश बदल रहा है। 2014 से पहले सिर्फ दो मोबाइल कंपनी देश में थी, लेकिन अब 125 हो गई हैं। इनमें से बड़ी कंपनियां नोएडा और ग्रेटर नोएडा में हैं। अपने भाषण में पीएम ने कहा कि मोदी अपनी जयकार के लिए काम नहीं करता बल्कि, मोदी हिंदुस्तान की जय के लिए काम करता है। साथ ही कहा कि कांग्रेस की सरकारों ने प्राचीन सभ्यता संस्कृति को नष्ट करने का काम किया, पहले की सरकारों ने अपने घोटालों पर घोटाले किए। मीडिया को राग दरबारी और चाटुकारों की पहचान करनी चाहिए। मोदी ने कहा कि कांग्रेस की सरकार की गलत नीतियों के कारण देश उन देशों से भी बिछड़ गए जो हमारे साथ आजाद हुए थे। हमारी सरकार दलाली करने वालों से सख्ती से निपट रही है। इसके साथ ही पीएम ने कहा कि हर बईमान को मोदी से कष्ट है, इसलिए वह मिल मुझे गाली दे रहे हैं। मुझे गाली देने के लिए वे अब देश का भी विरोध करने लगे हैं। आतंकवाद के मुद्दे पर पीएम मोदी ने कहा कि उरी सर्जिकल स्ट्राइक करके आतंक को पनाह देने वालों को उन्हीं की भाषा में समझाया। पुलवामा की घटना के बाद क्या मुझे चुप बैठना चाहिए था ? क्या चौकीदार को सोते रहने चाहिए था ? चौकीदार का कर्तव्य नहीं बनता कि वह देश पर हमला करने वालों को कड़ा जवाब दे, इसीलिए पाकिस्तान दुनिया के आगे रोने लगा कि मोदी ने यह क्या कर दिया हमारे ऊपर। हमने आतंकवादियों के अड्डों को नष्ट कर दिया।

नरेंद्र मोदी मुझे मंत्रीपद दे देते तो आसमान गिर जाता- शत्रुघ्न सिन्हा

पटना ।बिहार के पटना साहिब लोकसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बागी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा है कि अगर सच कहना बगावत है तो वे बागी हैं। उन्होंने कहा कि उन ?हें मंत्री पद की लालसा नहीं रही, लेकिन सवाल तो उठता है कि जब जैसे–तैसे लोगों को क्या नहीं बनाया गया, तब उन ?हें भी पद दे दिया जाता तो क्या आसमान गिर जाता ? अरूण जेटली को चुनाव हारने के बाद भी केंद्रीय मंत्रिमंडल में तीन–तीन महत्वपूर्ण विभाग दिए गए। स्मृति ईरानी चुनाव हार गयीं, फिर भी उन्हें मानव संसाधन विभाग दिया गया। लेकिन वे इतने नाकाबिल समझे गए कि चुनाव में रिकॉर्ड जीत के बाद भी मंत्री पद नहीं दिया गया। शत्रुघ्न सिन्हा ने यह भी कहा कि वे बिहार के मुख्यमंत्री पद की पेशकश को ठुकरा चुके हैं और आगे भी मुख्यमंत्री बनने का इरादा नहीं है। ? jagran.com से खास बातचीत में भाजपा के शत्र ने राजनीति के विभिन ?न मुद्दों पर खुलकर बातें की। साथ ही बेटी व बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा को अपने लिए ईश्वर का वरदान बताया। प्रस्तुत हैं बातचीत के महत्वपूर्ण अंश. उत्तर– ये सब बदले की भावना से किया जा रहा है। रैली में मुझे आमंत्रण नहीं दिया गया। मुझसे बात तक नहीं की गई। आपको बता दूं कि बिहार भाजपा की कोर कमेटी में बिहारी बाबू का ही नाम नहीं है। ऐसा नहीं कि बिहार में जनता ने यूं ही अपना वोट दिया। मैं पूछना चाहता हूं कि पार्टी में क्या मेरा योगदान नहीं रहा है ? अभी शूट और स्कूट की राजनीति हो रही है। संवाद खत्म हो गया है। लोकशाही नहीं तानाशाही चल रही है। उत्तर– भाजपा मेरी पार्टी रही है, उससे भावनात्मक लगाव है। मैंने अटलजी, आडवाणीजी के सानिध्य में काम किया है। लेकिन आज माहौल बदला हुआ है, क्या हो रहा है किसी से छुपा नहीं है ? देखकर तकलीफ होती है। कोई बुलाए या ना बुलाए फर्क नहीं पड़ता। बिहार की जनता मुझे प्यार करती है, मैं जनता के लिए काम करना चाहता हूं।

प्रश्न– क्या आप मान चुके हैं कि भाजपा इस बार आपको टिकट नहीं देगी ? किधर का रूख करेंगे–राजद या कांग्रेस का ?

उत्तर– (हंसते हुए) दो दिन रूक जाइए, सब पता चल जाएगा। मैंने अबतक भाजपा का साथ नहीं छोड़ा है और ना ही पार्टी ने अबतक निकाला है। लेकिन प्रत्याशी का नाम अनाउंस होते ही सबको पता चल जाएगा कि किसे टिकट मिलेगा, किसे नहीं। वैसे मैंने पहले भी कहा कि सिचुएशन कोई हो, लोकेशन वही रहेगा– पटना साहिब क्षेत्र। मैं इसी सीट से चुनाव लड़ूंगा। प्रश्न– आपकी नजर में महागठबंधन का कैसा भविष्य है ? उत्तर– महागठबंधन गजब का गठबंधन बना है। अभी देश का माहौल खराब हो चुका है और ऐसे में केंद्र की नीतियों को खिलाफ एकजुटता दिखाना पड़ेगी। महागठबंधन इसीलिए बना है ताकि जनता से की गई ठगी का, झूठे वादों का करारा जवाब दिया जाए। सबकी एकजुटता जरूरी है। महागठबंधन एक प्रकाश पुंज की तरह है जो देश की जनता के लिए नई रोशनी लेकर आएगा। सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए विकल्प जरूरी है, वरना लोकतंत्र खत्म हो जाएगा। तानाशाही हावी हो जाएगी। प्रश्न– पटना साहिब से भाजपा नेता आरके सिन्हा अपने बेटे ऋतुराज के लिए टिकट चाहते हैं ? आपकी क्या प्रतिक्रिया है ? उत्तर– वो मेरे बच्चे की तरह है, क्या प्रतिक्रिया होगी ? आरके सिन्हा मेरे दोस्त, मेरे भाई की तरह हैं। अगर वे अपने बेटे के लिए पटना साहिब से भाजपा की सीट चाहते हैं तो मेरी शुभकामनाएं हैं। यह तो पार्टी का फैसला होगा।

प्रश्न– आप बार–बार लालू–राबड़ी–तेजस्वी से मिल रहे हैं। क्या वजह है ?

उत्तर– मैं लालू जी से पहले भी मिलता रहा हूं। लालू जी ने कहा था कि मेरे परिवार का ख्याल रखिएगा। आज वे परेशान हैं। जिन लोगों ने खिलाफत की है उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा है। आज लालू जी का पूरा परिवार दुखी है। ऐसे में अगर हम राबड़ी जी, मीसा बेटी, तेजस्वी से मिल लिए तो कौन–सा पहाड़ टूट गया ? लालू जी के परिवार ने भरपूर सम्मान दिया है। बच्चे अंकल–अंकल कहते हैं, बहुत प्यार करते हैं। ऐसे में मिलना क्या गलत है ? प्रश्न– आपपर आरोप है कि आप भाजपा विरोधी नेताओं से निकटता रखते हैं। उत्तर– ऐसा नहीं है कि मेरी भाजपा विरोधी नेताओं से निकटता रही है। मैं राष्ट्रहित की बात करता हूं। राजनीतिक संबंध और आपसी संबंध दो अलग–अलग बातें होतीं हैं। मैंने कभी किसी व्यक्ति को नहीं, पार्टी को तवज्जो दी है। आडवाणी जी के कैंप का रहा हूं और पार्टी के साथ वफादारी आज भी है। मैं आडवाणी जी को नहीं छोड़ूंगा। दर्द होता है देखकर कि इस तरह से दरकिनार किया जाता है। प्रश्न– नीतीश कुमार जब महागठबंधन का हिस्सा थे तो आपकी उनसे मुलाकात होती थी, अब नहीं होती, ऐसा क्यों ? उत्तर– नीतीश कुमार बिहार के मुख्यमंत्री हैं। वे अच्छे दोस्त हैं। उनसे मिलना कम नहीं हुआ है। हां, आज के माहौल को देखते हुए किसी से मिलना भी हो तो लगता है कि इसके क्या कयास लगाए जाएंगे। प्रश्न– आपको मुख्यमंत्री पद की पेशकश की गई थी। लेकिन आप नहीं बने। क्यों ?

उत्तर– हां, मुझे पहले कई बार कहा गया कि बिहार का मुख्यमंत्री बनूं, लेकिन मैं केंद्र में रहकर बिहार और देश दोनों के लिए काम करना चाहता हूं। मैंने कभी ऐसी ख्वाहिश नहीं की कि मैं मुख्यमंत्री बनूं। अगर मुझे अब भी मौका मिलता है तो मैं केंद्र में ही रहना चाहूंगा। प्रश्न– आप 10 साल से पटना साहिब से सांसद हैं। पटना के लिए आपने क्या किया ?

उत्तर– मैं अपने काम की कभी गिनती नहीं करता, न ही प्रचार करता हूं। पटना में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) शत्रुघ्न सिन्हा की ही देन है। इसके लिए नीतीश कुमार ने भी तारीफ की थी। पटना के लिए बहुत सारे काम किए जो आप चाहें तो सरकारी विभागों से पता कर सकतीं हैं। काम को बोलना चाहिए, न कि आप अपनी खुद की तारीफ करते रहें। काम किया तभी जनता ने भी सर–आंखों पर रखा है।

प्रश्न– आप चाहें कुछ भी बोलें, विवाद तो फंसता ही है। क्या शत्रुघ्न सिन्हा विवादित बातें ही करते हैं या विवाद बस हो जाता है ? उत्तर– मैं चिकनी–चुपड़ी बातें नहीं करता। मेरे बयान का अगर कोई उल्टा मतलब निकाल ले तो इसका मैं क्या कर सकता हूं ? मैं अपना काम करता हूं और मुझे जो गलत लगता है, उसकी आलोचना करता हूं। जो अच्छा लगता है मैं तब तारीफ भी करता हूं।

प्रश्न– महिला दिवस के मौके पर देश की महिलाओं को क्या संदेश देंगे ?

उत्तर– आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी मजबूत दखल दे रही हैं। कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है। फख्र होता है ये देखकर। आपको बता दूं कि जब मेरी बेटी सोनाक्षी ने फिल्मों में जाने का फैसला किया तो लोगों ने कहा कि बेटी को फिल्मों में भेजेंगे ? मैंने कहा कि जब मेरे बेटे काम कर सकते हैं तो बेटी क्यों नहीं ? सोनाक्षी मेरे लिए ईश्वर के वरदान की तरह है। मुझे बेटियां बहुत प्यारी हैं।

एयर स्ट्राइक का एक असर यह भी– महागठबंधन पर छाया मुद्दों का संकट

(जी.एन.एस.) पटना ।पाकिस्तान पर एयर स्ट्राइक के बाद बिहार में महागठबंधन के सामने मुद्दों का संकट नजर आ रहा है। आरक्षण को हथियार बनाकर राष्ट्रीय जनता दल (राजद) माहौल बनाने की कोशिश जरूर कर रहा है, लेकिन सहयोगी दलों की सांसें अभी सम्मानजनक सीटों की हिस्सेदारी में ही अटकी हैं। लोकसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने वाली है और अभी तक एक संयुक्त रैली भी नहीं कर सकने वाले महागठबंधन के घटक दल मुद्दों के मसले पर सुस्त हैं। राजद को छोड़कर बाकी किसी पार्टी के पास अभी तक राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की संयुक्त ताकत से मुकाबले के लिए न तो असरदार मुद्दा है, न फॉर्मूला और न ही कोई रणनीति नजर आ रही है। हैरत यह भी है कि बिहार में संसदीय चुनाव की सरगर्मी बढने से पहले महागठबंधन के सभी सहयोगी दल विभिन्न मुद्दों पर सत्ता पक्ष के खिलाफ हमलावर थे। वे बात–बात पर आंदोलन कर रहे थे। पार्टी कार्यालयों से निकलकर सड़कों पर नारे बुलंद कर रहे थे। यहां तक कि महीने भर पहले विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सड़क से सदन तक सत्ता पक्ष के खिलाफ माहौल बनाया जा रहा था। पुलिस–प्रशासन की नाकामी के नारे गढ़े–पढ़े जा रहे थे। किंतु चुनाव की तपिश बढ़ते ही सभी दल पब्लिक से कटे नजर आ रहे हैं। महागठबंधन के घटक दलों के पटना से बाहर दिल्ली और रांची के दौरे ही ज्यादा हो रहे हैं। उनकी सूची से गांव–किसान, महिला, मजदूर और बेरोजगार गायब हैं। सारा दिमाग सीट हथियाने में लगा है। सम्मानजनक सीटों का पैमाना भी सबके लिए अलग–अलग है। किसी को 16 चाहिए तो किसी को छह तो कोई तीन से कम पर मानने के लिए तैयार नहीं है। किसी ने दूसरे घटक दल को ही पैमाना बना रखा है। उसे दूसरे से कम–से–कम एक ज्यादा चाहिए। महागठबंधन में सिर्फ राजद ही सक्रिय दिख रहा है। हालांकि, तेजस्वी यादव की सरकार विरोधी यात्राओं को अगर अपवाद मान लिया जाए तो राजद का नया नेतृत्व सोशल मीडिया के बुखार से बाहर नहीं निकल पा रहा है। तेजस ?वी के हाल के तेवर का आकलन किया जाए तो स्पष्ट होता है कि वे आरक्षण के मुद्दे पर ही लोकसभा चुनाव लडने की तैयारी कर रहे हैं। गरीब सवर्णों को आरक्षण दिए जाने के बाद तेजस्वी ने एससी–एसटी और ओबीसी के आरक्षण के दायरे को 49.50 फीसद से बढ़ाकर 90 फीसद करने के लिए प्रदेशभर में आंदोलन चला रखा है। इसके पहले केंद्र सरकार ने विश्वविद्यालयों में 13 प्वाइंट रोस्टर को सुधारकर राजद से यह मुद्दा छीन लिया। बिहार में मुद्दों की कमी नहीं है। धान खरीद की सुस्त रफ्तार, बाढ़, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और विशेष राज्य के मसले पर विपक्ष आंदोलन खड़ा करके सत्तारूढ़ दलों को परेशान कर सकता है, लेकिन इसके लिए उसे सोशल मीडिया से निकलकर सड़कों पर आने की जरूरत है। बिहार समेत देशभर में शिक्षा की बदहाली और न्यायपालिका में आरक्षण के मुद्दे पर केंद्र सरकार में रहते हुए राष्ट्रीय लोक समता पार्टी (रालोसपा) ने काफी हल्ला मचाया था। पार्टी ने पटना के गांधी मैदान में मानव कड़ी से लेकर दिल्ली में धरना–प्रदर्शन किया था। बाद में इसी मसले पर राजग और केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार का साथ छोड़कर उपेंद्र कुशवाहा महागठबंधन का हिस्सा बन गए। शिक्षा में सुधार के एजेंडे पर दो फरवरी को कुशवाहा ने पटना में आक्रोश मार्च निकाला। इसी दौरान पुलिस लाठीचार्ज में घायल भी हुए, जिसके खिलाफ महागठबंधन के घटक दल एकता का प्रदर्शन करते हुए सड़कों पर उतरे। उसके बाद से पब्लिक को कुशवाहा के आक्रामक तेवर का इंतजार है। बात–बात पर आंदोलन पर उतर जाने वाली रालोसपा कहीं खो सी गई है। हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) ने भी बिहार की सड़कों पर कम समय नहीं बिताया है,

जवाहर चावड़ा भाजपा में शामिल हो गए

कांग्रेस को झटका, विधायक जवाहर चावड़ा का इस्तीफा

जवाहर चावड़ा ने विधानसभा के अध्यक्ष राजेंद्र त्रिवेदी को इस्तीफा सौंप दिया : कांग्रेस की छावनी में चिंता

(संपूर्ण समाचार सेवा) अहमदाबाद,

२०१९ लोकसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही देश के अलग–अलग राज्यों में सियासी हलचल तेज है। पार्टियों के भीतर भी घमासान जारी है। इस बीच कांग्रेस को गुजरात में एक बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस के विधायक जवाहर चावड़ा ने इस्तीफा दे दिया है। शुक्रवार को चावड़ा ने विधानसभा अध्यक्ष राजेंद्र त्रिवेदी को अपना इस्तीफा सौंप दिया। जवाहर चावड़ा ने बीजेपी जॉइन कर लिया हैं। जवाहर चावड़ा कमलम पहुंचकर गृह राज्य मंत्री प्रदिपसिंह जाडेजा के हाथ मीठाई खाई और भाजपा का खेस भी पहना। जवाहर चावड़ा को केबिनेट मंत्री पद मिले ऐसी संभावना है। जवाहर चावड़ा सौराष्ट्र में आहिर समाज का प्रभुत्व है। चावड़ा वर्ष १९९० में पहलीबार विधायक बने थे। फिर २००७, २०१२ और २०१७ में भी चुनाव जीतकर चौथीबार विधायक बनने थे। पिछले कुछ दिनों से गुजरात कांग्रेस में काफी घमासान मचा हुआ है। यहां एक ओर जहां प्रदेश कांग्रेस कमिटी १२ मार्च को होने वाली पार्टी कार्यसमिति की बैठक की तैयारियों में लगी है, वहीं राजनीतिक गलियारों में ऐसी चर्चा तेज है कि कांग्रेस विधायक अल्पेश ठाकोर पार्टी के आधा दर्जन विधायकों के साथ बीजेपी में शामिल हो सकते हैं। बता दें कि ठाकोर कांग्रेस के टिकट पर पहली बार विधानसभा पहुंचे हैं और बीते काफी दिनों से पार्टी से नाराज चल रहे हैं। हालांकि अल्पेश ने अभी कांग्रेस छोड़ बीजेपी में शामिल होने के बारे में कुछ भी नहीं कहा है। जवाहर चावड़ा ने बीजेपी जॉइन कर लिया हैं। जवाहर चावड़ा कमलम पहुंचकर गृह राज्य मंत्री प्रदिपसिंह जाडेजा के हाथ मीठाई खाई और भाजपा का खेस भी पहना। जवाहर चावड़ा को केबिनेट मंत्री पद मिले ऐसी संभावना है। जवाहर चावड़ा सौराष्ट्र में आहिर समाज का प्रभुत्व है। चावड़ा वर्ष १९९० में पहलीबार विधायक बने थे। फिर २००७, २०१२ और २०१७ में भी चुनाव जीतकर चौथीबार विधायक बनने थे। पिछले कुछ दिनों से गुजरात कांग्रेस में काफी घमासान मचा हुआ है। पर, गुरुवार को उन्होंने इस बात के संकेत दिए थे कि वह शुक्रवार की दोपहर इस बारे में अहम फैसला ले सकते है। उधर, कांग्रेस के भीतर जारी घमासान और विधायकों की नाराजगी को कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अहमद पटेल ने खारिज कर दिया है। वडोदरा में उन्होंने साफ कहा कि पार्टी का कोई भी विधायक बीजेपी में शामिल नहीं होगा।

गाजियाबाद में महत्वपूर्ण परियोजना का लोकार्पण

पीएम नरेन्द्र मोदी ने मेट्रो और एयरपोर्ट का उद्घाटन किया

हिंडन एयरफोर्स का नया टर्मिनल इस बात का उदाहरण है कि हमारी सरकार कितनी तेजी से काम कर रही है : मोदी

(संपूर्ण समाचार सेवा) गाजियाबाद,

पीएम नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमने ऐसे कामों को अंजाम दिया है, जिन्हें पहले की सरकारें नामुमकिन मानती थीं। इससे पता चलता है कि 'मोदी है तो मुमकिन है'। शुक्रवार को गाजियाबाद के लोगों को मेट्रो के विस्तार और हिंडन एयर टर्मिनल का तोहफा देते हुए पीएम मोदी ने यह नारा दिया। शहर के लिए इन महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लोकार्पण के बाद संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि हिंडन एयरफोर्स का नया टर्मिनल इस बात का भी उदाहरण है कि हमारी सरकार कितनी तेजी से काम कर रही है। ९ से १० महीने पहले ही इस टर्मिनल का विचार आया था, लेकिन इतने कम समय में ही इस पर काम पूरा हो गया। पीएम मोदी ने कहा कि दिलशाद गार्डन मेट्रो का विस्तार होने से आपको राहत मिलेगी। अब आपको दिल्ली, नोएडा और गुड़गांव जाने के लिए जाम से राहत मिल सकेगी। अब सफर की सफरिंग निश्चित तौर पर कम होने वाली है। पीएम मोदी ने कहा कि दिल्ली से मेरठ के बीच रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम का भी शिलान्यास हुआ है। इससे दिल्ली से मेरठ की दूरी सिर्फ एक घंटे की रह जाएगी। इसमें ३०,००० करोड़ रुपये की लागत आएगी। नॉर्दन पेरिफेरल मास्टर प्लान और आउटर रिंग रोड का भी शिलान्यास हुआ। इनके पूरे होने पर दिल्ली से आने वाले वाहनों को गाजियाबाद में एंट्री की जरूरत नहीं होगी। शहर के लिए इन महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लोकार्पण के बाद संबोधित करते हुए पीएम ने कहा कि हिंडन एयरफोर्स का नया टर्मिनल इस बात का भी उदाहरण है कि हमारी सरकार कितनी तेजी से काम कर रही है। ९ से १० महीने पहले ही इस टर्मिनल का विचार आया था, लेकिन इतने कम समय में ही इस पर काम पूरा हो गया। पीएम मोदी ने कहा कि दिलशाद गार्डन मेट्रो का विस्तार होने से आपको राहत मिलेगी। अब आपको दिल्ली, नोएडा और गुड़गांव जाने के लिए जाम से राहत मिल सकेगी। अब सफर की सफरिंग निश्चित तौर पर कम होने वाली है। पीएम मोदी ने कहा कि पाकिस्तान में वायुसेना की एयर स्ट्राइक पर विपक्ष सवाल उठा रहा है। वे पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं। आप ही बताइए कि क्या पाकिस्तान कहेगा कि हमारे ऊपर हमला हुआ है। पीएम मोदी ने वीर जवानों के सम्मान में आम लोगों से मोबाइल फोन की फ्लैश लाइट जलवाई। उन्होंने कहा कि इस फ्लैश से उन लोगों को रोशनी मिलेगी, जिन्हें दिखता नहीं है। पीएम मोदी ने कहा, किसानों और मजदूरों के लिए हाल ही में दो योजनाओं की शुरुआत की गई है। किसान सम्मान निधि और पीएम श्रमयोगी मानधन योजना। देश के २ करोड़ से ज्यादा किसानों को पहली किस्त मिल चुकी है। साल भर में लगभग ७५,००० करोड़ रुपये सीधे किसानों के खाते में जमा किए जा रहे हैं। कामगार बुजुर्गों को ३,००० रुपये की नियमित पेंशन मिले, ऐसी योजना देश में पहली बार आई है। घरों में काम करने वाले, कूड़ा बीनने वाले, रिक्शा चलाने जैसे कामों में लगे कामगार साथियों को हमारी सरकार ने बुढ़ापे का सहारा दिया है। आज तक की सरकारें तमाम कामों को नामुमकिन मानती रहीं, लेकिन मोदी है तो मुमकिन है। पहले गरीबों के लिए इलाज नामुमकिन लगता था, लेकिन मोदी है तो मुमकिन है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 and Published from TF-01, Nanakram Super Market,Ramnager,Sabarmati, Ahmedabad - 380 005.Editor : MANOJKUMAR CHAMPKLAL SHAH